मिथक, प्रतीक और कविता

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

मिथक, प्रतीक और कविता

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2023

© डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

निवेदन

“मिथक, प्रतीक और कविता” मेरे चार पूर्व प्रकाशित निबंधों का संकलन है।

एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में इन निबंधों को एकत्र देखने का औचित्य यही हो सकता है कि ये परस्पर – संबद्ध हैं और कविता की समझ के किन्हीं ख़ास पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। एक-जैसे प्रसंगों से बार – बार जुड़ते रहने वाले इन निबंधों में कहीं-कहीं एक जैसी बातों का आ जाना अस्वाभाविक नहीं है, लेकिन इनमें संदर्भ – भेद के कारण नवीनता और परस्पर – पूरकता का अभाव नहीं है।

दिनेश्वर प्रसाद

उद्भव बाबू लेन

राँची – 834001

15 अगस्त ,1997

अनुक्रम

मिथक का स्वरूप	4
क्लॉद लेवी-स्त्रॉस का मिथक-विश्लेषण	81
मिथक- विश्लेषण का लेवी-स्त्राँसीय सूत्र	98
काव्य - रचना - प्रक्रिया और मिथक	114
काव्य और प्रतीक	163

मिथक का स्वरूप

अपने महत्व के कारण मिथक कभी लोकसाहित्य की एक स्वतंत्र विधा के रूप में प्रस्तावित हुआ है, तो कभी इसकी सीमा से बाहर एक पूर्ण स्वतंत्र विषय के रूप में, किन्तु सामान्यत: कहानी और आख्यान की तरह इसे भी लोककथा का एक भेद स्वीकार किया गया है-एक वैसा भेद, जो प्राचीन काल से ही संस्कृति के अध्येताओं का ध्यान आकर्षित करता रहा है और जिसके स्वरूप की व्याख्या आज भी विवादास्पद बनी हुई है। कहानी काल्पनिक होती है और मुख्यत: मनोरंजन के लिए ही कही और सुनी जाती है, लेकिन आख्यान और मिथक सत्य माने जाते हैं। आख्यान का आधार, लोकसाहित्य के आधुनिक अध्येताओं की दृष्टि में भी, सत्य होता है। इसे विकृत इतिहास कहना इसी बात का प्रमाण है और यह इंगित करता है कि इसके मूल में कोई ऐतिहासिक घटना रहती है, जो कालान्तर में अतिरंजित हो जाती है। मिथक, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, सत्य नहीं होता। यूरोपीय भाषाओं में इसका सत्य के विपरीतार्थक शब्द के रूप में भी प्रयोग होता है। किन्तु यह जिन जातियों के द्वारा कहा और सुना जाता है, उनके द्वारा सत्य माना जाता है। किम्बॉल यंग ने लिखा है कि 'मिथक और आख्यान विश्वास करने वाले व्यक्तियों द्वारा सत्य माने जाते हैं। हम अपने मिथकों और आख्यान को मनोरंजन के लिए गढ़ी गयी विचित्र या विदेशी कथाएं नही,